

ASNA ARCHIVES

3663

१. श्री गंगा नदी ॥ यद्विष्णोः ॥
२. ब्रह्म ॥ नमो ॥ श्री गंगा नदी ॥
३. इति ॥ विष्णोः ॥ यद्विष्णोः ॥

१ नयालवर्ष ॥ प्रितुवर्ष ॥ नव ॥ वसु ॥ मास ॥
आषाढ ॥ यक्ष ॥ शुक्र ॥ टिक्कि ॥ भसि ॥ धाकुर
॥ नस ॥ आग ॥ दिग ॥ वात्र ॥ मृग ॥ लाङ्गि ॥ प्राक

॥ श्रीरुगवति भुक्तुति ॥ उग्रचंता ॥ चंदिका ॥
१ नम ॥ नमस्कात्र ॥ येनाम ॥ १ सध ॥ पितृगद्यया
१ स्वाहा ॥ भनि ॥ भनियारा ॥ ने ॥
१ वीषटाडशटन ॥ भवइषविय ॥
१ दुर्गा ॥ गात्र ॥ नेवर्ष ॥
१ वसु ॥ नव ॥ नव ॥ नव ॥ नव ॥ नव ॥
१ नव ॥ नव ॥ नव ॥ नव ॥ नव ॥ नव ॥

१ श्री नमः शिवाय ॥ १ ॥ १ नमः ४ श्री द्विं च
६ श्री नमः ४ श्री द्विं या पू ॥ १ ॥ १ नमः ४
संलं वं नं यं जया अक्षय गच्छय ४ या पू ॥ २ ॥ १ नमः
४ नं वं नं संलं वं नं यं श्री रु गन ति का श्या य नी तु भ
४ यो या पू ॥ ३ ॥ मार्क ६ य उ वा च ॥ य इ य
प न म ला क स र्व न का क न नृ ण । य न क स्य चि

दा रथा तं त न्म बु दि यि ता म ह ॥ ॥ व क्षा वा च
अ स्मि गु ष्ठ त म वि प्र स र्व रु ता य का न क । द द्या
मु क न र्च यू ष्ठ त च्छु ष्ठ म ह म न ॥ प्र थ म ६
ल य प्रि च द्वि ति यं व द्म चा पि णी । त ति यं च छु
घ ६ ति कृ ष्मा ६ ति च तु र्थ क ॥ यं ४ म स्म न
मा त ति त्व र्थ का त्या य णी ति च । स फ र्म का ल ना प्रि

च. महात्मनीति वाच्यम् ॥ नवमं कामदा प्रति
नवदुर्गाष्टयकीर्तिता ॥ उक्ता न्यतानि नामानि त्र
यैव महात्मना ॥ अग्निना ददुमानसु ॥ अ
म. ॥ गता त्र. ॥ विषमदुर्गमयैव. ॥ रया लो ॥ ४४
त्रयं गता ॥ न तेषां जायेत किंचिद. ॥ ४४ ॥ त्रयं
कट. ॥ नायदंतस्य य. ॥ ४४ ॥ कड ॥ ४४ ॥ य

कनी ॥ यैसु र. ॥ स. ॥ तानूनं. ॥ तेषां वृद्धि ॥ ४४ ॥ जाय
ते. ॥ यतासनस्त्वा. ॥ म. ॥ वा. ॥ तदिमदि. ॥ सा. ॥ सना ॥
नुन्दी गजसमा. ॥ तू. ॥ वे. ॥ कवी. ॥ ग. ॥ तू. ॥ सना. ॥ मा. ॥ ४४
त्री. ॥ वृ. ॥ सा. ॥ तू. ॥ को. ॥ मा. ॥ त्री. ॥ शि. ॥ वि. ॥ वा. ॥ ह. ॥ ना ॥ वा. ॥ श्री. ॥ हं. ॥ स
समा. ॥ तू. ॥ दा. ॥ सर्वा. ॥ र. ॥ त. ॥ दा. ॥ र. ॥ ता. ॥ ना. ॥ ना. ॥ र. ॥ त. ॥ दा. ॥ ४४ ॥ रा
द्या. ॥ ना. ॥ ना. ॥ त. ॥ लो. ॥ य. ॥ ४४ ॥ रि. ॥ ता ॥ १० ॥ ल. ॥ श्री. ॥ य. ॥ दा. ॥ स

[illegible][illegible]

य. महारुयविनाशिनि ॥ ग्राहिमादि विदु ४ प्र. क.
४ प्र. धर्मरुयवर्द्धिनी। प्राच्यां प्रकृतु को मात्री। आ. वृ.
यामग्निदवता ॥ दक्षि. ए. प्रकृतु वा नाही जे मृ. त्याख
मू. धा. त्रि. धा. ॥ यतीच्यां वा प्रु. धी. प्र. क. दा. य. च्यां मृ. ठा. वा
हिनी ॥ उ. दि. च्यां प्र. क. को व. त्री. ॥ ७७ ॥ मृ. न्यां मृ. ल. धा. नी
धी ॥ उ. र्द्ध. व. झा. धी. म. प्र. क. द. ध. सा. द. वृ. वी. त. था ॥ २०

॥ नेवद. धा. दि. ॥ मृ. प्र. क. दा. मू. धा. धा. व. वा. दि. नी। ज.
याम. वा. य. त. ४. सा. तु. वि. ज. या. सा. तु. पृ. वृ. त. ४ ॥ मृ. जी.
ता. वा. म. या. ॥ मृ. तु. द. क्षि. ए. दा. य. ना. जी. ता। शि. खा. मृ.
धा. ति. नी. प्र. क. इ. मा. मृ. धि. वा. व. स्ति. ता ॥ मा. ला. ध. नी
ल. ला. ४. च. प्रु. वा. प्र. क. इ. मृ. सि. नी। वि. न. या. च. वृ. वा
मृ. धा. य. म. ध. धा. च. ना. शि. क. ॥ मृ. सि. नी. च. वृ. धा.

[illegible]

मङ्गला ॥ श्रीवायं रुद्र काली च यष्टुर्वं ॥ अधनूद
नी ॥ नीलश्रीवावदि ४ क ॥ ६ ॥ ललीतानलकूवत्र ॥
स्वप्नध्वनिध्वरो सुधो वा दू म व ज ध्वनिधी ॥ ह
सुयाद्विनिनीजक दम्बिका याहु लिषूच । नखा
नूध्वलध्वनीनक । कुकोनकनलध्वनी ॥ सुनी
नक नमहा देवी । मनःश्री कविनाथिनी । हृद

यललिनादवी। उदयशूलधनिनी ॥ ३० ॥ ना
लोचयोमिनीनक। दुर्दुर्गुद्वित्रीतथा। यत्त
नाथाचमधुच। गुठमहिषवाहिनी ॥ कर्द्यां
गवतिनक। जानूयांविन्धवासिनी। जल्लम
हावलायाका। जानूमध्विनायकी ॥ रुद्रया
नीनसिंदीच। यादयष्टचनजसी। यादोमशूली

नीनक। सर्वकामप्रदायिनी ॥ यादशूलीश्रीधत्री
नक। त्यादाधसुलवासिनी। नखान्दशूकजालीच
कैश। श्वेवोद्वकशिनी ॥ नामकूयादिकोमात्री।
लचवागीश्वत्रीतथा। नकमजावसामांस। लसि
मदीसियावति ॥ अज्ञानिकालनाप्रिच। यिल्लच
मूकूतश्वत्री। यद्वावनीयदकाय। कद्रूजम

लिस्तथा ॥ काला मूखी नख काला मरुं श्रा सर्व सन्धी
षू। शु कं व द्वा यनी न के को यौं कुं प्रे श्व त्री तथ ॥
भू र्द का र्ज म भा वृ द्धि न क र्म सर्व प त्री दी। या धा या
लो त था या न मू दा र्ज च समा न के ॥ व द्वा द स्ता च
म न क ल्या र्ण क ल्य सूर्य र्ण न। न स नू य च ग न्ध
च ग द स्य र्ण च या गी नी ॥ स ल न ज स्त म र्ण व

न क र्जा या य दी सदा। आयु र्म न क वा ना दी ध र्म
न क र्ज वे य वी ॥ ४० ॥ य ग ४ की र्ण च ल र्ण च सदा
न क र्ज ह न वी। र्ण प्र मि द्वा दी म न क ल्य र्ण न
क व र्ण के ॥ य ग न क र्म हा ल र्ण र्ण यौ न क र्ज
ह न वि। ध न र्ण त्री ध न न क र्म न म र्ण र्म क र्ज
तथ ॥ य र्ण न वि य थ न क र्म र्ण मा त्री क न्य का

तथा। लक्ष्मी प्राज कूल प्रकृति जया सर्वतः ॥
ना ॥ सर्वत्र का करैयुर्ध्वं कवचं सर्वदा जयं ॥
०० दं प्रहस्यं विप्रस्यं हृदयं नवमया दितं ॥ प्रका
हिन प्रयत्नान् वरुणं कवचं ननु । तत्सर्वं प्रक
मदवी । जयं निपायनामिनी ॥ प्रकृम सर्वं ग
यादि । इग्ना इग्नेय हात्रिणी । यदमर्कं न गच्छतु

यदि कृच्छ्रं हमात्मनः ॥ कवचं नावृत्तानि ह्यं
यप्रतप्यं हगच्छति । तत्र तत्रार्थलार्थं च विजय
॥ सर्वकामिकं ॥ ययं चित्तयत्तं कामं तं न प्राप्ना
ति नित्यं ॥ १॥ यत्र मेधय्यं मत्तुलं प्राप्नाति वियुलं
युमान् ॥ निर्हया जायतं मत्तुलं ॥ संग्रामं यत्र
जीतं ॥ १॥ यत्तु हवत्युत्तं ॥ कवचं नावृत्तं ॥ १॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or invocation, featuring stylized characters and some red ink markings.

गोसंकाशाहानमः ॥ ॐ नमः ॥

ASHA ARCHIVES

3663

कन्या श्री आचार्य

३० अक्टूबर १९६१ विर । विना देण्डा कन्या

मान ॥ ॐ दंतु दया ॥ कवच दवानामयि इह रं ।
यय १० ल्योतत्रु ल्याय प्रिसन्ध अद्य याचित ॥ १० ॥
दवी कुलाह वरुस्य । वैला वरुस्य याजित ॥ ११ ॥
द्वयं न सा ग्री मल्य मल्य विवर्जित ॥ न ॥ १२ ॥
ग्राधय ॥ सर्व लुटा विस्तु टका दय ॥ १३ ॥
उं गम वायि कृहि म वायि यद्विष ॥ १४ ॥ अहि वा

लाधि सर्वाधि मनु यनाधि ह त ल । ह व या ॥
स्व च या ॥ १५ ॥ कल जा ॥ १६ ॥ यद गि का ॥ १७ ॥
कल जा माला ॥ १८ ॥ जि नी ॥ १९ ॥ कि नीत था ॥ २० ॥
व या धा वा ॥ २१ ॥ जि न्य ॥ २२ ॥ म हा व ला ॥ २३ ॥
॥ २४ ॥ य द्वा ॥ २५ ॥ न्ध व ॥ २६ ॥ न क सा ॥ २७ ॥
नाला ॥ २८ ॥ कृ ष्णा ॥ २९ ॥ रं न वा द य ॥ ३० ॥ न ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥

हृत्स्य कवचं दृढि संलिङ्गमाना नृनिर्द्वन्द्वार्थ
तं जावेद्वि कर्तव्यं ॥ यथा सावर्द्धं न सोयि की
लिमति तत्तल । तस्माज्जयत्सदा हृत्स्य कव
चं कामदं मून ॥ यत्तत्तय भर्ति चर्हि कृत्वा उ
कवचं पूजा । निर्विधुन हव सिद्धिः ॥ अष्टि ज
यस मूरुवा ॥ यावद्दूमधुलं धरु सल्लवन

काननं । तावलिष्ठति मदिन्या संतति ४ पूज
योऽकि ॥ दहानं यत्र मूकानं यत्तु त्रैत्रयि इ
ष्टं । तं प्राप्ताति मनूष्या सो महा माया प्रसा
दत ॥ मनसा चिन्तनं कार्यं तत्सर्वं सरुलं हव
त् ४ । लहन्त यत्र मूक्यं भिवन सतनं वज्रत् ॥
३१ ॥ ॥ इति श्रीरुद्रिह न वज्रविर्नचिर्न दद्या ४ कव









